International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 12-03-2023, Accepted: 27-03-2023, Published: 13-04-2023
Volume 9, Issue 2, 2023, Page No. 78-80

भारत–अमेरिका संबंधों में प्रवासी भारतीयों का योगदान

सुनीता बघेले
सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, भगवान बिरसा मुंडा शासकीय महाविद्यालय, दिव्यगवा, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के तुरन्त बाद संसार में दो महाशक्तियों ने शीत युद्ध को जन्म दिया और विश्व को कोदो शक्ति गुटों में विभाजित कर दिया। ये दो महाशक्यिाँ थींः संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ। लगभग उसी समय जब दोनों शक्ति गुटों में शीत युद्ध ने गति पकड़ी, भारत, ब्रिटिश उपनिवेशवाद से स्वतन्त्र होकर, एक नवोदित राष्ट्र के रूप में उभर कर राजनीतिक क्षितिज पर प्रकाशमान हुआ। भारत ने निःसंकोच यह निर्णय किया कि वह किसी भी गुट में शमिल न होकर एक स्वतन्त्र विदेश नीति अपनाएगा। भारत की गुट–निरपेक्षता की नीति इसी मूल निर्णय का परिणाम थी। इस नीति के अनुसार सभी देशों के साथ मित्रता, परन्तु गठबंधन किसी के साथ भी न करने का निर्णय लिया गया। स्वाभाविक था कि सभी के साथ मित्रता करने के प्रयास में भारत ने न केवल ब्रिटेन के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाए रखे, वरन् दोनों महाशक्तियों के साथ भी मधुर संबंध विकसित करने का प्रयत्न किया। संसार के दो विशाल लोकतान्त्रिक देश होने के नाते भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका में मित्रता की अपेक्षा की गई। सामान्य रूप से इन दोनों संबंध मधुर रहे भी हैं, परन्तु कभी–कभी उनमें कटुता भी उत्पन्न हुई। किन्हीं दो स्वतन्त्र और स्वाभिमानी देशों के बीच ऐसा होना स्वाभविक भी है। इसमें संक्षेप में भारत और अमेरिका के संबंधों की समीक्षा किया गया है।

मूल शब्दः भारत, अमेरिका, संबंध, प्रवासी

द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के तुरन्त बाद संसार में दो महाशक्तियों ने शीत युद्ध को जन्म दिया और विश्व को कोदो शक्ति गुटों में विभाजित कर दिया। ये दो महाशक्यिाँ थींः संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ। लगभग उसी समय जब दोनों शक्ति गुटों में शीत युद्ध ने गति पकड़ी, भारत, ब्रिटिश उपनिवेशवाद से स्वतन्त्र होकर, एक नवोदित राष्ट्र के रूप में उभर कर राजनीतिक क्षितिज पर प्रकाशमान हुआ। भारत ने निःसंकोच यह निर्णय किया कि वह किसी भी गुट में शमिल न होकर एक स्वतन्त्र विदेश नीति अपनाएगा। भारत की गुट–निरपेक्षता की नीति इसी मूल निर्णय का परिणाम थी। इस नीति के अनुसार सभी देशों के साथ मित्रता, परन्तु गठबंधन किसी के साथ भी न करने का निर्णय लिया गया। स्वाभाविक था कि सभी के साथ मित्रता करने के प्रयास में भारत ने न केवल ब्रिटेन के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाए रखे, वरन् दोनों महाशक्तियों के साथ भी मधुर संबंध विकसित करने का प्रयत्न किया। संसार के दो विशाल लोकतान्त्रिक देश होने के नाते भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका में मित्रता की अपेक्षा की गई। सामान्य रूप से इन दोनों संबंध मधुर रहे भी हैं, परन्तु कभी–कभी उनमें कटुता भी उत्पन्न हुई। किन्हीं दो स्वतन्त्र और स्वाभिमानी देशों के बीच ऐसा होना स्वाभविक भी है। इसमें संक्षेप में भारत और अमेरिका के संबंधों क उतार–चढ़ाव की समीक्षा करेंगे।

भारत–अमेरिका संबंधों में अमेरिका सरकार ने भारत को कभी भी उच्च प्राथमिकता नहीं दी। चीन द्वारा भारत पर 1962 में किए गए आक्रमण ने अमेरिका की नीतियों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया। उसके पश्चात् भारत के प्रति अमेरिका की नीति में कुछ परिवर्तन हुआ। परन्तु अमेरिका ने सदा केवल अपने राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखा, और भारत को एक अधीनस्थ देश का दर्जा दिया, समानता का नहीं। उसने भारत के दृष्टिकोण को समझने और उसके राष्ट्रीय हितों पर ध्यान देने का कष्ट नहीं किया। अमेरिका ने भारत की गुट निरपेक्षता को सोवियत समर्थक नीति समझा। भारत–अमेरिका संबंधों के उतार चढ़ाव पर टिप्पणी करते हुए स्टेन्ली हॉफमैन (जंदसमल भंजिंदद) ने लिखा था कि, ''सभी प्रमुख देशों में से भारत ही एक ऐसा देश है जिसके साथ संयुक्त राज्य संबंध उलझन पैदा करने वाले रहे हैं।'' उन्होंने लिखा था कि जब से भारत स्वतन्त्र हुआ दोनों देशों में अनेक तनाव उत्पन्न हुए और उन्होंने अनुकूलता के अवसरों को हाथों से निकल जाने दिया। भारत–अमेरिका संबंध को ''अमैत्रीपूर्ण मित्रों'' के संबंध कहा गया।

भारतीय प्रवासी संयुक्त राज्य अमेरिका में रहने वाले सबसे जीवंत और गतिशील अमेरिकी समूहों में से एक है। नवीनतम अमेरिकी जनगणना डेटा (2021) से पता चलता है कि 4 मिलियन से अधिक भारतीय–अमेरिकी हैं, जो अमेरिका की आबादी का 1.3 प्रतिशत हैं। भारतीय–अमेरिकी, अमेरिका के सबसे तेजी से बढ़ते जातीय समूहों में से एक हैं, जिनकी जनसंख्या में 2010 के बाद से 40 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है।

सांस्कृतिक रूप से समृद्ध, उच्च शिक्षित और आर्थिक रूप से सफल समुदाय की उपस्थिति दुनिया के सबसे बड़े और सबसे पुराने लोकतंत्रों के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करती है। भारतीय समुदाय के कम से कम 79 प्रतिशत लोग अंग्रेजी भाषा में कुशल हैं और लगभग 68 प्रतिशत के पास स्नातक की डिग्री है। भारतीय–अमेरिकी कांग्रेसी राजा कृष्णमूर्ति के अनुसार, भारतीय–अमेरिकियों के पास किसी भी समुदाय की प्रति व्यक्ति आय सबसे अधिक है, कंप्यूटर विज्ञान और वित्त सहित अत्यधिक प्रतिस्पर्धी क्षेत्रों में उनकी प्रमुख उपस्थिति है, और लगभग 10 प्रतिशत अमेरिकी डॉक्टर भारतीय मूल के हैं। भारतीय प्रवासियों का अमेरिका में तीन चरणों में विकास हुआ है, पहला शिक्षा और रोजगार की तलाश, दूसरा, प्रेषण का प्रमुख स्रोत (2017 में यू.एस से भारत में $10.657 बिलियन का वार्षिक प्रेषण) और तीसरा यू. एस की गतिशीलता को प्रभावित करने वाले प्रभावी खिलाड़ियों के रूप में। अमेरिका मे भारतीय प्रवासी एक प्रभावी सार्वजनिक कूटनीति उपकरण हैं और अपने नैतिकता, अनुशासन, हस्तक्षेप ना करने और स्थानीय लोगों के साथ शांतिपूर्वक जीवन बिताने के लिए माने जाते हैं। ये मूल्य अंततः यू.एस में भारतीयों की पहचान बनाने, छवि प्रक्षेपण और छवि बनाने में योगदान करते हैं।

अमेरिका में कई हिंदी रेडियो स्टेशन उपलब्ध हैं जैसे कि आर.बी. सी रेडियो, इजी रेडियो, रेडियो हमसफर, देसी जंक्शन, रेडियो

सलाम नमस्ते, फनएशिया रेडियो और संगीत। भारतीय केबल चौनल जैसे कि सोनी टीवी, जी टीवी, स्टार प्लस, कलर्स और क्षेत्रीय चौनल भी प्रसारित होते हैं। कई भारतीय मूल के कलाकार हॉलीवुड का हिस्सा हैं। इनमें से कुछ प्रतिभाशाली कलाकार हैं प्रियंका चोपड़ा, पद्मा लक्ष्मी, फ्रीडा पिंटो, कुणाल नैय्यर, मीरा नायर और मधुर जाफरी। मेट्रोपॉलिटन जिलों की सिनेमाघरों में भी बॉलीवुड फिल्में दिखाई जाती हैं। अधिकांश भारतीय त्योहार उसी उत्साह और जोश के साथ मनाए जाते हैं विशेष रूप से सार्वजनिक समारोहों और बॉलीवुड नृत्य के माध्यम से दिवाली का त्यौहार मनाया जाता है। धार्मिक भारत के हिंदू 51 प्रतिशत, सिख 5 प्रतिशत, जैन 2 प्रतिशत, मुस्लिम 10 प्रतिशत और ईसाई 18 प्रतिशत समुदायों ने संयुक्त राज्य अमेरिका में दृढ़ता के साथ अपने धर्म को स्थापित किया है। हिंदू भारतीयों ने यू.एस में हिंदू अमेरिकन फाउंडेशन का गठन किया है। ये भारतीय धार्मिक समुदाय दान कार्य में सहायता करते हैं जब भी अमेरिका में आवश्यकता पड़ती है। मुख्य रूप से खालसा फूड पेंट्री और खालसा पीस कॉर्प्स नियमित रूप से अमेरिका में रहने वाले कम आय वाले परिवारों को सहायता प्रदान करते हैं और किसी भी प्राकृतिक आपदा के बाद के परिदृश्य में भी सहायता करते हैं। 'द सिखसेस' संगठन भोजन और कपड़ों के रूप में और सार्वजनिक सेवा के अवसर पैदा करके सहायता प्रदान करता है। भारतीय प्रवासियों ने उच्च शिक्षा प्राप्त की है, समग्र यू.एस में 25 साल तक की उम्र तक बैचलर्स डिग्री पूरा करने वाले 31 प्रतिशत लोगों की तुलना में 79 प्रतिशत भारतीय प्रवासी 25 साल की उम्र तक बैचलर्स डिग्री पूरा करते हैं। इसके अलावा, 25 और उससे अधिक आयु वर्ग में अमेरिका की मात्र 11 प्रतिशत सामान्य जनता की तुलना में 44 प्रतिशत भारतीय प्रवासी मास्टर्स डिग्री, पी.ए. चडी या उन्नत पेशेवर डिग्री अर्जित कर चुके हैं। 2015–16 स्कूली वर्ष में लगभग 166,000 भारतीय अप्रवासियों को अमेरिका के उच्च शिक्षा संस्थानों में दाखिला दिया गया था, जो समग्र 1 मिलियन अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों का 16 प्रतिशत हिस्सा था। वे मुख्य रूप से विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (एस. टी.ई.एम) क्षेत्रों में काम करके अन्य नागरिकों को पछाड़ते हैं। शैक्षणिक वर्ष 2022–23 में भारत से संयुक्त राज्य अमेरिका जाकर पढ़ने वाले विदेशी छात्रों की संख्या 35 प्रतिशत बढ़कर 268923 छात्रों के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गई है। अमेरिका से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले भारतीय छात्रों की संख्या 63 प्रतिशत बढ़कर 165936 हो गई जिससे पिछले साल की तुलना में इस साल लगभग 64000 छात्रों की वृद्धि हुई है।

भारतीय प्रवासी अमेरिका में सबसे अमीर जातीय समुदायों में से एक है। सभी भारतीय वंशजों की औसत वार्षिक आय लगभग $ 89,000 है, जो कि अमेरिकी नागरिकों की औसत वार्षिक आय $ 50,000 से अधिक है। निवेश आय के मामले में, 15 प्रतिशत अमेरिकी लोगों की तुलना में 20 प्रतिशत भारतीय परिवारों की कुल आय में लाभांश से मिलने वाली आय शामिल थी, जबकि 43 प्रतिशत अमेरिकी नागरिकों की तुलना में 52 प्रतिशत भारतीयों को ब्याज से आय मिलती थी। 2000 की अमेरिकी जनगणना रिपोर्ट के अनुसार, एशियाई भारतीय पुरुष आबादी की ''पूरे वर्ष की पूर्णकालिक औसत आय सबसे अधिक थी ($ 51,094), जबकि एशियाई भारतीय महिलाओं की औसत आय ($ 35,173) थी। भारतीय प्रवासी यू.एस में 50 प्रतिशत किफायती लॉज और 35 प्रतिशत होटलों के मालिक हैं, जिसका बाजार मूल्य लगभग $ 40 बिलियन है। 2002 में भारतीय प्रवासी अमेरिका के 223,000 से अधिक फर्मों के मालिक थे और $ 88 बिलियन से अधिक की आमदनी करते थे। नवीनतम जनगणना आंकड़ों का हवाला देते हुए एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका में भारतीयों की औसत घरेलू कमाई 123,700 अमेरिकी डॉलर और 79 प्रतिशत कॉलेज स्नातक हैं, जो धन और कॉलेज शिक्षा के मामले में कुल अमेरिकी आबादी से आगे निकल गए हैं।

नवंबर 2016 में 5 भारतीय अमेरिकी उम्मीदवारों रो खन्ना, राजा कृष्णमूर्ति, प्रमिला जयपाल और कमला हैरिस को यू.एस कांग्रेस में चुना गया, ऐसा करके उन्होंने एक नया इतिहास गढ़ा जबकि एमी बेरा को दूसरी बार चुना गया था। 2016 के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनावों में जीत हासिल करने के बाद, डोनाल्ड ट्रम्प ने उनका धन्यवाद करते हुए हिंदुओं की प्रशंसा करके भारतीय अमेरिकी लोगों की राजनीतिक भागीदारी पर प्रकाश डाला। अमेरिका में 2018 में 60 भारतीय प्रवासी उम्मीदवार संघीय चुनाव, राज्य विधानमंडल और स्थानीय कार्यालय सीटों के लिए चुनाव लड़ रहे हैं। वर्तमान में, ट्रम्प के मंत्रिमंडल में लगभग 9 भारतीय अमेरिकी वरिष्ठ सार्वजनिक पदों के प्रभारी हैं जैसे कि श्रीमती निक्की हेली – संयुक्त राष्ट्र में अमेरिकी राजदूत, कृष्णा आर उर्स – पेरू में अमेरिकी राजदूत, मनीषा सिंह – आर्थिक मामलों के लिए राज्य की सहायक सचिव, नील चटर्जी – संघीय ऊर्जा नियामक आयोग के सदस्य, राज शाह – राष्ट्रपति के उप सहायक और प्रधान उप प्रेस सचिव, विशाल अमीन – बौद्धिक संपदा (आई.पी) प्रवर्तन समन्वयक, नेओमी राव – सूचना और नियामक मामलों के कार्यालय (ओ.आई.आर.ए) की प्रशासक, अजीत वी पाई – संघीय संचार आयोग के अध्यक्ष और सीमा वर्मा – मेडिकेयर और मेडिकऐड सेवाओं के लिए केंद्रों की प्रशासक। ये स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि अमेरिकी राजनीति एक रूपांतरण से गुजर रहा है, जहाँ भारतीय मूल के अधिक से अधिक लोग अपनी कड़ी मेहनत और दृढ़ संकल्प से राजनीतिक ऊंचाइयों को छू रहे हैं।

अमेरिका में भारतीय प्रवासी दोनों देशों के बीच संबंधों की पुनः रचना में योगदान दे रहा है। भारत दो कारणों के आधार पर भारतीय–अमेरिकियों के अविर्भाव को एक प्रतिष्ठित समुदाय के रूप में मान्यता देता है। पहला, भारतीय अमेरिकी लोग अमेरिकी चुनावी राजनीति में एक महत्वपूर्ण वोट बैंक के रूप में सामने आए हैं। दूसरा, भारतीय–अमेरिकी लोग काफी शिक्षित और बेहद अमीर हैं। जनसंख्या में वृद्धि और आर्थिक शक्ति में हिस्सेदारी के साथ, भारतीय अमेरिकी पैरवी का ध्यान भारत की समस्याओं की ओर झुक गया है। उदाहरण के लिए, अप्रवासन कानून के संबंध में, भारतीय प्रवासियों ने यू.एस की 1965 अप्रवासन नीति में भारतीयों के लिए अप्रवासन कानूनों के पक्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। दूसरा है, नेशनल फेडरेशन ऑफ इंडियन अमेरिकन एसोसिएशन द्वारा की गई पैरवी के प्रयासों के कारण ही भारत पर प्रतिबंध लगाने की अमेरिकी नीति को निष्क्रिय किया जा सका। परिणामस्वरूप, एन.एस.जी द्वारा भारत पर लगाए गए प्रतिबंध (1998 के परमाणु प्रसार के बाद) को अमेरिका की सिफारिश पर हटा दिया गया था। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने भारत के दौरे के दौरान खुद ही प्रतिबंध हटाने पर प्रवासी भारतीयों के दबाव का जिक्र किया था। एक और उदाहरण है भारत–अमेरिका नागरिक परमाणु सहयोग सहमति को अंतिम रूप देने में भारतीय प्रवासियों की उल्लेखनीय अनुनय। इस '123 सहमति' की पुष्टि जुलाई 2007 में हुई और अक्टूबर 2008 में इस पर हस्ताक्षर किया गया, जिससे भारत अप्रसार संधि के सभी प्रावधानों का लाभ उठाने में सक्षम हो सका।

अमेरिका में भारत की सॉफ्ट पॉवर का लक्ष्य सामरिक प्रकृति का है। भारतीय अमेरिकी लोग दबाव बनाकर और प्रचार–प्रसार करके अमेरिका सरकार के अधिकारियों को अधिक सहायक और संवेदनशील बनने के लिए राजी करवा रहे हैं। यू.एस.ए से आने वाली एफ.डी.आई पर्याप्त नहीं है और संभावित अपेक्षा और आवश्यकता से कम है। इसलिए, अमेरिका से पर्याप्त प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को जब्त करने के लिए प्रवासी भारतीयों द्वारा कुशल पैरवी महत्वपूर्ण है। वह दूसरा क्षेत्र जिसमें भारतीय प्रवासियों ने भारत की सहायता की है, वो है 'विदेशी शिक्षा प्रदाता विधेयक, 2010' के तहत शैक्षिक भेदभाव से उभरना, जिसे

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जी ने अनुमोदन प्रदान किया था। भारतीय प्रवासियों की पैरवी अमेरिकी सरकार को भारत में अमेरिकी विश्वविद्यालय परिसरों की स्थापना द्वारा सहयोग करने के लिए राजी कर सकती है। भारत की घरेलू और वैश्विक स्तर पर विविध आकांक्षाएं हैं जिनके लिए विशाल विदेशी पूंजी और अभिस्वीकृति की बहुत आवश्यकता है।

निष्कर्षतः भारतीय प्रवासियों का अभूतपूर्व ढंग से विकास हुआ है, 1960 और 1970 के दशक में पहली पीढ़ी के एक छोटे एवं अराजनैतिक समूह के आप्रवासियों से लेकर 21 वीं शताब्दी में अमेरिकी समाज का एक आर्थिक और सामाजिक रूप से सुस्थापित हिस्सा बनने तक। प्रवासी भारतीयों ने निस्संदेह ही अग्रणी, अशिक्षित और कम कुशल पंजाबी किसानों से ऊपर उठकर वर्तमान में अधिक कुशल तीन मिलियन लोगों का एक मजबूत समुदाय बनाने की लंबी दूरी तय की है। भारतीय अमेरिकियों ने कई वकालती संगठनों और राजनीतिक कार्य समितियों की स्थापना की है जिन्होंने भारत के लिए महत्वपूर्ण मुद्दों के पक्ष में कई बुनियादी कार्य किया है। भारतीय अमेरिकियों की समृद्ध सभ्यता और सांस्कृतिक लोकाचार अमेरिकी ताने–बाने का हिस्सा बन गया है, जहाँ दोनों देश भारतीय प्रवासियों को एक–दूसरे के लिए लाभकर मानते हैं। भारत की संस्कृति का प्रसार करने में भारतीय प्रवासियों की भूमिका गैर–सरकारी सार्वजनिक राजनयिकों और सांस्कृतिक राजनयिकों के माध्यम से राष्ट्र में भी योगदान दे रही है।

संदर्भ सूचि

1. https://diplomacybeyond.com/indian-diaspora-as-a-pillar-of-indo-american-relations-india-atlanta-solidarity/
2. https://www.jagran.com/world/america-us-news-america-on-top-choice-for-indian-students-to-pursue-higher-education-as-per-odr-report-23579406.html
3. https://economictimes.indiatimes.com/nri/migrate/indians-in-us-wealthier-with-average-household-earning-of-123700report/articleshow/85623601.cms?from=mdr
4. http://bit.ly/*47*iVDWh
5. https://navbharattimes.indiatimes.com/india/overseas-community-is-an-important-pillar-of-indo-us-relations-indian-ambassador/articleshow/89147931.cms
6. अप्रवासन और कानून, अप्रवासन की राजनीती, 2018
7. यू.एस में भारतीय प्रवासी महत्वपूर्ण क्यों हैं, द इकनोमिक टाइम्स, 2018
8. भारतीय प्रवासीः जनजातीय और प्रवासी पहचान, सी.ए.आर. आई.एम भारत, 2013
9. एम.पी.आई, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में भारतीय प्रवासी, 2014
10. एम.आई.टी, यू.एस–भारत परमाणु सौदा और भारतीय प्रवासियों की भूमिका, 2008.
11. ओ.आर.एफ,यू.एस निर्वाचन, भारतीय प्रवासियों की भूमिका का स्पष्टीकरण, 2015.